अयोध्या में संत सम्प्रदाय के मन्दिर

डॉ अखिलेश कुमार त्रिपाठी, सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग,
टी0एन0पी0जी0कालेज,टाण्डा, अम्बेडकरनगर
राघवेन्द्र पाण्डेय, शोध छात्र– समाजशास्त्र
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.144

सरांश

सम्पूर्ण विश्व में अयोध्या भगवान श्रीराम जन्मभूमि के रुप में सदियों से प्रसिद्ध है। श्रीरामचन्द्र की पावन नगरी अयोध्या की स्थापना महाराज मनु द्वारा की गई थी।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः।।[1]

अयोध्या, मथुरा, मायापुरी, काशी, कान्ची, अवन्तिका और द्वारावती ये सात पुरियां मोक्ष देने वाली हैं। सात पुरियों में सर्वप्रथम अयोध्या को स्थान दिया गया है जो मोक्ष देने वाली है।

मुक्तिदायिनी, अयोध्यापुरी का अप्रतिम महात्म्य आर्षग्रन्थों विशेषकर विभिन्न पुराणों में प्राप्त होता है। इनमें भी स्कन्दपुराण के द्वितीय वैष्णवखण्ड का अयोध्या–महात्म्य रुद्रयामल तन्त्र का अयोध्याखण्ड विशिष्ट है। इसके अतिरिक्त भी अयोध्या का वर्णन श्रीवाल्मीकीय रामायण, श्रीरामचरितमानस में भी है। भगवान श्रीरामचन्द्र की नगरी अयोध्या सनातन हिन्दू धर्म के लिए आस्था का केन्द्र है। सनातन धर्म के अन्तर्गत अयोध्या में भी और तीर्थ, धर्म, सन्तों के साथ–साथ अयोध्या में भी वैष्णव, शैव,शाक्त आदि सम्प्रदाय के मन्दिर व सन्तों के आश्रम भी हैं।

मुख्य शब्दः– श्रीरामचन्द्र, अयोध्या,सरयू,मोक्षदायिनी,सम्प्रदाय, वैष्णव, शैव, शाक्त, आस्था, पूजा–पद्धति।

प्रस्तावना

अयोध्या के कतिपय शास्त्रीय तथ्य [2]

- अयोध्या की स्थापना मनु द्वारा की गई है।
- अयोध्या सरयू नदी के दक्षिण तट पर बसी है।
- सरयू नदी अयोध्या के उत्तर–पश्चित किनारे से होकर बहती है।
- अयोध्या मोक्ष देने वाली नगरी है। (गरुड़ पुराण के अनुसार)
- अयोध्यापुरी बारह योजन लम्बी तथा तीन योजन चौड़ी है।
- अयोध्या 8 चक्र एवं 9 द्वारवाली है। (अर्थववेदानुसार)
- अयोध्या सुदर्शन चक्र पर बसी है।(स्कन्दपुराण के अनुसार)
- अयोध्या श्रीरामचन्द्र के धनुष के अग्र भाग पर स्थित है।(भूतशुद्धितत्वानुसार)
- अयोध्या में कल्प वाए–कार्तिक मास (गुप्तारघाट पर)
- अयोध्या के कोटपाल (कोतवाल)–विभिषण के ज्येष्ठ पुत्र मत्तगजेन्द्र (मातगैड़) जो अयोध्या में रामकोट के रक्षक के रुप में विराजमान हैं।

संत की परिभाषा

धार्मिक शब्द के रुप में संत का प्रयोग आध्यात्मिक शक्ति से परिपूर्ण एवं उच्च धार्मिक मूल्यों को धारण करने वाले व्यक्ति के लिए किया जाता है। संत वे है जो सामान्य मनुष्यों से श्रेष्ठ एवं मन वचन एवं कर्म से सभी प्रणियों का कल्याण चाहते हैं। [3]

विधि हरि हर कबि कोबिद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी।।
सो मो सन कहि जात न कैसे।
साक बनिक मनि गुन गन जैसें।।[4]

तुलसीदास जी श्रीरामचरितमानस में लिखते हैं, ब्रह्मा, श्रीहरि विष्णु, शिव, कवि और पण्डित विद्वानों की वाणी भी सन्तों के महिमा का वर्णन करने में सकुचाते हैं वह मुझसे भी नहीं कहीं जाएंगी, ठीक वैसे जैसे साग,तरकारी बेचने वाले को मणियों के गुण के बारे में नहीं कहा जा सकता है।

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।[5]
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार।।

तुलसीदास जी कहते हैं, विधाता ने विश्व को जो जड़ चेतन है उसको गुण–दोष मय रचा है किन्तु संत लोग हैं वह हंस की तरह हैं जैसे हंस दूध में मिले जल को अलग कर देते हैं और दूध को ही पीते हैं ठीक उसी प्रकार संत है जो दोष रुपी जल को छोड़कर गुण रुपी दूध को ही ग्रहण करते हैं।

तुलसीदास जी श्रीरामचरितमानस में संत के महत्व को बताते हुए लिखते हैं कि जब माता सती के सामने माता सति के पिता दक्ष प्रजापति महादेव का अपमान करते हैं तब माता सति आने पिता से कहती हैं–

संत संभु श्रीपति अपबादा। सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा।।[6]
काटिअ तासु, जीभ जो बसाई। श्रवण मूदि नत चलिअ पराई।।

जिस जगह जहाँ भी संत, शंकर, श्रीलक्ष्मीपति भगवान श्री विष्णु की निदा सुनी जाय वहाँ ऐसी मर्यादा है कि यदि स्वंय का वश चले तो उस निदा करने वाले की जीभ काट लें नही तो स्वंय का कान मूंदकर वहां से भाग जायें।

भारतीय देव बाद में अवतारों की अवधारणा की प्राचीनता ऋग्वेद से सिद्ध होती है।

ऋग्वेद के आधार पर त्रिविक्रम विष्णु का उल्लेख मिलता है। त्रिदेव, त्रिविक्रम, तीन सर्वोच्च शक्तियाँ, तीन ईश्वरीय शक्तियाँ ये सब एक ही है और शब्दों के भाव अर्थ अनुभूति एक जैसी ही हैं। इन पौराणिक त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु, शिव में भगवान विष्णु ही जगत के पालनकर्त्ता हैं। ब्राह्मण धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों में वैष्णव धर्म का सबसे महत्वर्पूण स्थान है। भगवान विष्णु ही वैष्णव धर्म के ईष्ट देव हैं।

हिन्दू धर्म में छः सम्प्रदाय प्रमुख रुप से प्रचलित हुए जो उस समय की परिस्थिति में उपयुक्त थे।

शैवाश्च वैष्णवाश्चैव शाक्ताः सौरास्तथैव च।[7]
गणपत्याश्च ह्ययागामाः प्रर्णाताः शंकरेण तु।।

शैव, वैष्णव, शाक्त, गणपत्य, कौमार, सौर इन देवों में भी तीन देवों की उपयोगिता अधिक मान्य की गई है।

1– शैव सम्प्रदाय

शैव सम्प्रदाय के सन्तों की मान्यता और आस्था है कि शिव भोले अथवा शंकर उनके आदि देव हैं। भारतीय समाज सदा से ही धर्म प्रधान समाज रहा है।[8]

शैव धर्म के सिद्धान्त के अन्तर्गत सर्वप्रथम पाशुपति सिद्धान्त का जन्म श्रीकण्ठ से हुआ था।

पुराणों एवं अभिलेखों से इस सम्प्रदाय के प्रमुख व्यक्ति लकुलीश का ज्ञान होता है।

इनका इस सम्प्रदाय के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। पुराणों में इनको शिव का 28 वां और अन्तिम अवतार बताया गया है।[9] धर्म नगरी अयोध्या में वैष्णव धर्म के साथ शैव सम्प्रदाय के सन्तों का भी विकास है। यहाँ शैव सम्प्रदाय के कई प्राचीन शिवलिंग एवं मन्दिर विद्यमान है।

सरयू नदी के तट पर स्वर्गद्वारा क्षेत्र में स्थित नागेश्वरनाथ मन्दिर है इसकी स्थापना श्रीरामचन्द्र के पुत्र कुश द्वारा किया गया था।[10]

अयोध्या में शैव सम्प्रदाय के मन्दिरः–[11]

- नागेश्वरनाथ मन्दिर, स्वर्गद्वार, अयोध्या।
- रुदेश्वर महादेव मन्दिर, मऊशिवाला,अयोध्या।
- मन्त्रेश्वरनाथ मन्दिर एवं शिवलिंग, जनौरा, अयोध्या।
- दूर्गेश्वरनाथ मन्दिर एवं शिवलिंग, रामकोट, अयोध्या।
- उमा–माहेश्वरः परागदास मन्दिर, ऋणमोचन घाट, अयोध्या।
- दर्शनेश्वरनाथ मन्दिर एवं शिवलिंग, राजसदन, अयोध्या।
- क्षीरेश्वरनाथ मन्दिर एवं शिवलिंग, क्षीरसागर, अयोध्या।
- योगेश्वरनाथ मन्दिर एवं शिवलिंग, टेढ़ी बाजार **वर्तमान नाम (गुरु वशिष्ठ चौक)**, अयोध्या।
- पंचमुखी महादेव मन्दिर, गोप्रतारघाट, अयोध्या।

2– वैष्णव सम्प्रदाय

वैष्णव धर्म को मानने वाले वैष्णव अनुयायी कहलाते हैं या वैष्णव सम्प्रदाय के कहलाते हैं। इन्हें भागवत भी कहा जाता है। इस सम्प्रदाय के सन्तों में अपने आराध्या देव में अटूट श्रद्धा होता है।

वैष्णव सम्प्रदाय के सन्त श्री हरि विष्णु के दो स्वरुपों में स्वीकार करते हैं।

1– **सगुण रुप**– सगुण रुप को व्यक्त रूप भी कहा जाता है।

2– **निर्गुण रुप**– निर्गुण रुप को अव्यक्त रुप भी कहा जाता है।

वैष्णव सम्प्रदाय के सन्तों के अनुसार सृष्टि के तीन तत्व होते हैं– जड़, जीव, नियन्ता।

ईश्वर इन्हीं तीनों के समन्वय से संसार में प्राणियों की उत्पत्ति होती है। इसमें शक्ति ईश्वर के हाथ में होती है इसी कारण ईश्वर भक्त के समीप होते हैं।[12]

वैष्णव सम्प्रदाय के सन्तों का प्रमुख सिद्धान्त

- संत पूर्ण रुप से धर्म की पवित्रता को धरण किये हैं।
- वैष्णव सम्प्रदाय के सन्त भक्ति को ही मोक्ष का सर्वश्रेण्ठ साधन बताते हैं।
- यह सनातन को ही धर्म मानते हैं, इनकी नजर में हिन्दू ही सनातनी है और सभी मजहब, पंथ, मार्ग हैं।
- इस सम्प्रदाय के सन्त भगवान श्री विष्णु के सभी अवतारों को महत्व देते हैं।

अयोध्या में वैष्णव सम्प्रदाय के मन्दिरः–[13]

- सप्तहरि विष्णु मन्दिर, अयोध्या।
- गुप्त हरि एवं चक्रहरि मन्दिर गोप्रतार घाट, अयोध्या।
- विष्णु हरि मन्दिर, प्रहलाद घाट, अयोध्या।
- चन्द्रहरि मन्दिर, राम की पैड़ी, अयोध्या।

- धर्महरि मन्दिर, मीरापुर, अयोध्या।
- विल्वहरि मन्दिर, पूरा बाजार, अयोध्या।
- पुष्यहरि मन्दिर, पुनहद गांव, अयोध्या।
- कनक भवन मन्दिर, रामकोट, अयोध्या।
- श्रीकालेराम मन्दिर,स्वर्गद्वार, अयोध्या।
- रत्न सिंहासन मन्दिर, रामकोट, अयोध्या।
- त्रेता के ठाकुर, स्वर्गद्वार, अयोध्या।
- श्रीवामदेव मन्दिर, वशिष्ठ कुण्ड, , अयोध्या।
- श्रीराम सभा मन्दिर, नजरबाग, अयोध्या।
- श्री आचारी मन्दिर, दन्तधावन कुण्ड, , अयोध्या।
- श्री तिवारी मन्दिर, नयाघाट, अयोध्या।
- श्री रामजन्मभूमि मन्दिर, रामकोट, अयोध्या।
- पत्थर मन्दिर, वासुदेवघाट, अयोध्या।
- यज्ञवेदी मन्दिर, जयसिंहपुर, अयोध्या।
- उदासिन आश्रम एवं मन्दिर, रानोपाली, अयोध्या।
- श्रीरामदरबार, हनुमानगढ़ी, रामकोट, , अयोध्या।

3– शाक्त सम्प्रदाय–

शक्ति को ईष्ट देवी मानकर पूजा करने वाले सम्प्रदाय को ही शाक्त सम्प्रदाय कहा जाता है। शाक्त सम्प्रदाय के सन्त शक्ति से परिपूर्ण विभिन्न देवियों की पूजा अर्चना करते हैं। शक्ति सम्प्रदाय के सन्त दुर्गा, भवानी, काली, रौद्री, पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी, रुद्राणी, महिषासुरमर्दिनी एवं देवी चामुण्डा आदि देवी की उपासना करते हैं।[14]

शाक्त धर्म का शैव धर्म के साथ सदैव से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल में भी शक्ति की उपासना के साक्ष्य मिलते हैं। महाभारत में वर्णित दुर्गा की दो स्तुतियाँ तथा हरिवंशपुराण में वर्णित अर्यास्त व देवी के महत्व को पूर्णतः स्पष्ट कर दिया है। रामायण के अनुसार रावण का पुत्र मेघनाद अपने शत्रुओं को पराजित करने के लिए अपनी कुल देवी निकुम्भला की पूजा किया करता था और अपने शत्रुओं को पराजित करता था।

ब्रह्मा, विष्णु और शिव इन त्रिदेवों के साथ 3 देवियों का अस्तित्व स्वीकार कर लिया गया है। भगवान शिव ने माता पार्वती को पत्नी के रुप में स्वीकार किया है। ब्रह्मा की पत्नी सरस्वती (ब्रह्म की पुत्री), श्रीहरि विष्णु की पत्नी लक्ष्मी जी बतलाया गया है।

अयोध्या के शाक्त सम्प्रदाय के प्रमुख मन्दिरः–

- चुटकी देवी मन्दिर, रानोपाली, अयोध्या।
- जालपा देवी मन्दिर, रानोपाली, अयोध्या।
- पाटेश्वरी देवी मन्दिर, कैण्ट, अयोध्या।
- महाविद्या देवी, मन्दिर, विद्याकुण्ड, अयोध्या।
- देवी प्रतिमाएं, हनुमानगढ़ी मन्दिर, रामकोट, अयोध्या।

- शीतला देवी मन्दिर (बड़ी देवकाली), अयोध्या।
- महिषासुरमर्दिनी, कालेराम मन्दिर, अयोध्या।
- महिषासुरमर्दिनी, चन्द्रहरि मन्दिर, अयोध्या।
- गिरिजा देवी (छोटी देवकाली) मन्दिर, शास्त्री नगर, अयोध्या।

अयोध्या का इतिहास बतलाता है कि वर्तमान अयोध्या महाराज विक्रमादित्य की बसायी है। महाराज विक्रमादित्य देशाटन करते हुए संयोगवश यहाँ सरयू किनारे पहुँचे थे और यहाँ उनकी सेना ने शिविर डाला था। उस समय वहाँ वन था। इस भूमि मे कुछ चमत्कार दिखे। उन्होंने खोज प्रारम्भ की औश्र पास के संतों की कुपा से उन्हें ज्ञात हुआ कि यह श्रीरामचन्द्र की भूमि अयोध्या है। उन संतों के निर्देश से महाराज ने यहाँ भगवल्लीलास्थली का जानकर मन्दिर, सरोवर, कूप आदि बनवाये। [15]

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना।।
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानई कोउ कोउ।।
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि।।
जा मज्जन ते बिनहीं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा।।
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी।। [16]

भगवान् श्रीरामचन्द्र अपने मित्र सुग्रीव, विभिषण आदि से अयोध्या के बारे में बताते हुए कहते हैं – यद्यपि सबने बैकुण्ठ की बड़ाई किया है, यह वेद–पुराणों में प्रसिद्ध है और यह सारा जगत जानता है कि परन्तु अवधपुरी के सामान मुझे वह भी प्रिय नहीं है। यह बात कोई बिरले ही जानते हैं। वह सुहावन पुरी मेरी जन्मभूमि है, इसके उत्तर दिशा में जीवों को पवित्र करने वाली सरयू नदी बहती ह, जिसमें स्नान करने से मनुष्य बिना ही परिश्रम मुक्ति पा जाते हैं। किसी भी जन्म में जो कोई भी अयोध्या में बस जाता है, वह अवश्य ही श्रीरामचन्द्र जी के परायण हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– गीता प्रेस, गोरखपुर, गरूण पुराण, सं0 2079, श्लोक–213, पृष्ठ संख्या–266
2– गीता प्रेस, गोरखपुर, अयोध्या–दर्शन, संवत् 2080, पृष्ठ संख्या–31
3– त्रिपाठी बी0डी0, साधूज ऑफ इण्डिया, 2004, पृष्ठ संख्या–11
4– गीता प्रेस, गोरखपुर, श्रीरामचरितमानस, सं0 2079, बालकाण्ड, पृष्ठ सं0–6
5– गीता प्रेस, गोरखपुर, श्रीरामचरितमानस, सं0 2079, बालकाण्ड, पृष्ठ सं0–9
6– गीता प्रेस, गोरखपुर, श्रीरामचरितमानस, सं0 2079, बालकाण्ड, पृष्ठ सं0–62
7– देवी भागवत 7 स्कन्द
8– संदीप मिश्रा , अयोध्या के स्थानीय मंदिरों का इतिहासःएक अध्ययन, 2022, पृष्ठ–101
9– संदीप मिश्रा , अयोध्या के स्थानीय मंदिरों का इतिहासःएक अध्ययन, 2022, पृष्ठ–101
10– संदीप मिश्रा , अयोध्या के स्थानीय मंदिरों का इतिहासःएक अध्ययन, 2022, पृष्ठ–102
11– मन्त्रत्रेश्वरमितिरक्ष्यातं तत्स्थानं भूवि दुर्लभम। पाण्डेय, पाणिनीः रुद्रयामलीय अयोध्या माहात्म्य, पृ0–285
दुर्गेश्वरे तस्मिन् द्वारे व्यवस्थितः । पाण्डेय, पाणिनीः रुद्रयामलीय अयोध्या माहात्म्य, पृष्ठ–110
क्षीरोदकात परितमेतुनाम्ना क्षरेश्वरस्मतः रुद्रयामल 14.54
12– संदीप मिश्रा , अयोध्या के स्थानीय मंदिरों का इतिहासःएक अध्ययन, 2022, पृष्ठ–68
13– संदीप मिश्रा , अयोध्या के स्थानीय मंदिरों का इतिहासःएक अध्ययन, 2022, पृष्ठ–219–224
14– संदीप मिश्रा , अयोध्या के स्थानीय मंदिरों का इतिहासःएक अध्ययन, 2022, पृष्ठ–115
15– गीता प्रेस, गोरखपुर, अयोध्या–दर्शन, संवत् 2080, पृष्ठ संख्या–19
16– गीता प्रेस, गोरखपुर, श्रीरामचरितमानस ७।४।३–७